वेयणागदिविहाणाणुयोगद्दारं

वेयणागदिविहाणे त्ति ।। १ ।।

एदमहियारसंभालणसुत्तं । वेदनायाः गतिर्गमनं विधीयते प्ररूप्यते अनेनेति वेदनागतिविधानम् । कधं कम्माणं जीवपदेसेसु समवेदाणं गमणं जुज्जदे ? ण एस दोसो, जीवपदेसेसु जोगवसेण संचरमाणेसु तदपुधभूदाणं कम्मक्खंधाणं पि संचरणं पडि विरोहाभावादो । किमट्ठं वेदणागइविहाणं वुच्चदे ? जदि कम्मपदेसा ट्ठिदा चेव होंति तो जीवेण देसंतरगदेण सिद्धसमाणेण होदव्वं । कुदो ? सयलकम्माभावादो । ण ताव पुव्वसंचिदकम्माणि अत्थि, तेसिं पुव्वपदेसे थिरसरूवेण अवट्ठिदाणमेत्थ, आगमणाभावादो। ण वट्टमाणकाले वि कम्मसंचओ अत्थि, मिच्छत्तादिपच्चयाणं कम्मेहि सह ट्ठिदाणमेत्थ संभवाभावादो त्ति । ण कम्मक्खंधाणमणवट्ठाणं पि जुज्जदे, सव्वजीवाणं मुत्तिप्पसंगादो । तं जहा-ण ताव अप्पिदबिदियसमए कम्माणि अत्थि, अवट्ठाणाभावेण णिम्मूलदो विणट्ठत्तादो। ण उप्पण्णपढमसमए वि फलं देंति, बज्झमाणसमए कम्माणं विवागाभावादो । भावे वा कम्म कम्मफलाणमेगसमए चेव संभवो

....

वेदनागतिविधान अनुयोगद्वार अधिकार प्राप्त है ।। १ ।।

यह सूत्र अधिकारका स्मरण करानेवाला है । वेदनाकी गति अर्थात् गमनकी इसके द्वारा प्ररूपणा की जाती है, अतएव वह वेदनागतिविधान कहलाता है ।

शंका – जीवप्रदेशोंमें समयवायको प्राप्त हुए कर्मोंका गमन कैसे सम्भव है ।

समाधान – यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, योगके कारण जीवप्रदेशोंका संचरण होनेपर उनसे अपृथग्भूत कर्मस्कन्धोंके भी संचारमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका – वेदनागतिविधान अनुयोगद्वार किसलिये कहा जा रहा है ?

समाधान – यदि कर्मप्रदेश स्थित ही हों तो देशान्तरको प्राप्त हुए जीवको सिद्ध जीवके समान हो जाना चाहिए, क्योंकि, उस समय उसके समस्त कर्मोंका अभाव है । यह कहना कि उसके पूर्वसंचित कर्म विद्यमान हैं, ठीक नहीं है; क्योंकि, वे पूर्व स्थानमें ही स्थिर रूपसे अवस्थित हैं, उनका यहाँ देशान्तरमें आना असम्भव हैं । वर्तमान कालमें भी उसके कर्मोंका संचय नहीं है, क्योंकि, कर्मोंके साथ स्थित मिथ्यात्वादिक प्रत्ययोंकी यहाँ सम्भावना नहीं है । कर्मस्कन्धोंका अनवस्थान स्वीकार करना भी योग्य नहीं है, क्योंकि, वैसा माननेपर सब जीवोंकी मुक्तिका प्रसंग आता है । यथा–विवक्षित द्वितीय समयमें कर्मोंका अस्तित्व नहीं है, क्योंकि, अवस्थानके न होनेसे उनका निर्मूल नाश हो गया है । उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें वे फल नहीं देते हैं, क्योंकि, बन्ध होनेके समयमें कर्मोंका फल देना असम्भव है । अथवा, यदि बन्ध समयमें फलका देना स्वीकार किया जाय तो फिर कर्म और कर्मफल इन दोनोंकी एक समयमें ही

होदूण बिदियसमएसु बंधसंताभावो होज्ज, तत्थ बंधकारणमिच्छत्तादि कम्मफलाणमभावादो । एवं च संते तत्थ णिव्वुइए सव्वजीवविसयाए होदव्वं । ण च एवं, तहाणुवलंभादो। ण चोहयपक्खो वि जुज्जदे उभयदोसाणुसंगादो त्ति पज्जवट्ठियस्स सिस्सस्स[1] जीव-कम्माणं पारतंतियलक्खणसंबंधजाणावणट्ठं जीवपदेसपरिफंदहेदू चेव जोगो त्ति जाणावणट्ठं च वेयणागइविहाणं परूविज्जदे ।

णेगम-ववहार-संगहाणं णाणावरणीयवेयणा सिया अवट्ठिदा ।।२।।

राग-दोस-कसाएहि वेयणाहि वा भएण अद्धाणजणिदपरिस्समेण वा जीवपदेसेसु अद्दट्ठिदजलं[2] व संचरंतेसु तत्थ समवेदकम्मपदेसाणं पि संचरणुवलंभादो । जीवपदेसेसु पुणो कम्मपदेसा ट्ठिदा चेव, पुव्विल्लदेसं मोत्तूण देसंतरे ट्ठिदजीवपदेसेसु समवेदकम्मक्खंधुवलंभादो। कुदो एदमुवलब्भदे ? सियासद्दुच्चारणण्णहाणुववत्तीदो, देसे इव जीवपदेसेसु वि अट्ठिदत्ते अब्भुवगम्ममाणे पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो च । अट्ठण्णं मज्झिमजीवपदेसाणं संकोचो विकोचो वा णत्थि त्ति तत्थ ट्ठिदकम्मपदेसाणं पि अट्ठिदत्तं णत्थि

....

सम्भावना होकर द्वितीय समयमें बन्ध और सत्त्वका अभाव हो जाना चाहिये, क्योंकि, दूसरे समयमें बंधके कारण मिथ्यात्वादिका तथा कर्मफलका अभाव है । और ऐसा होनेपर उस समय सब जीवोंकी मुक्ति हो जानी चाहिये । परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता । यदि उभय पक्षको स्वीकार किया जाय तो वह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, बैसा स्वीकार करनेपर उभय पक्षोंमें दिये गये दोषोंका प्रसंग आता है । इस प्रकारसे पर्यायदृष्टिवाले शिष्यके लिये जीव व कर्मके पारतन्त्र्य स्वरूप सम्बन्धको बतलानेके लिये तथा जीवप्रदेशोंके परिस्पन्दका हेतु योग ही है इस बातको भी बतलानेके लिये 'वेदनागतिविधान' की प्ररूपणा की जा रही है ।

नैगम, व्यवहार और संग्रह नयोंकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी वेदना कथंचित् अवस्थित है ।। २ ।।

राग, द्वेष और कषयासे, अथवा वेदनाओंसे, भयसे अथवा अध्वानसे उत्पन्न परिश्रमसे मेघोंमें स्थित जलके समान जीवप्रदेशोंका संचार होनेपर उनमें समवायको प्राप्त कर्मप्रदेशोंका भी संचार पाया जाता है । परन्तु जीवप्रदेशोंमें कर्मप्रदेश स्थित ही रहते हैं, क्योंकि, जीवप्रदेशोंके पूर्वके देशको छोडकर देशान्तरमें जाकर स्थित होनेपर उनमें समवायको प्राप्त कर्मस्कन्ध पाये जाते हैं ।

शंका – यह अर्थ किस प्रमाणसे उपलब्ध होता है ?

समाधान – एक तो वैसा अर्थ ग्रहण किये बिना 'स्यात्' शब्दका उच्चारण घटित नहीं होता। दूसरे देशके समान जीवप्रदेशोंमें भी कर्मप्रदेशोंको अस्थित स्वीकार करनेपर पूर्वोक्त दोषका प्रसंग आता है । इससे जाना जाता है कि जीव प्रदेशोंके देशान्तरको प्राप्त होनेपर उनमें कर्मको प्रदेश स्थित ही रहते हैं ।

शंका – यत: जीवके आठ मध्य प्रदेशोंका संकोच अथवा विस्तार नहीं होता अत: उनमें

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'सिस्सस्स' इत्येतत्पदं नापलभ्यते। (२) प्रतिषु 'जीवपदेसेसुअद्दहिदजलं' इति पाठः ।

त्ति । तदो सव्वे जीवपदेसा कम्हि वि काले अट्ठिदा होंति त्ति सुत्तवयणं ण घडदे ? ण एस दोसो, ते अट्ठमज्झिमजीवपदेसे मोत्तूण सेसजीवपदेसे अस्सिदूण एदस्स सुत्तस्स पवुत्तीदो। कधं पुण एसो अत्थविसेसो उवलब्भदे ? सियासद्दप्पओआदो ।

सिया ट्ठिदाट्ठिदा ॥ ३ ॥

वाहि-वेयणा-सज्झसादिकिलेसविरहियस्स छदुमत्थस्स जीवपदेसाणं केसिं पि चलणाभावादो तत्थ ट्ठिदकम्मक्खंधा वि ट्ठिदा चेव होंति, तत्थेव केसिं जीवपदेसाणं संचालुवलंभादो तत्थ ट्ठिदकम्मक्खंधा वि संचलंति, तेण ते अट्ठिदा त्ति भण्णंति । तेसिं दोण्णं समुदायो वेयणा त्ति एया होदि । तेण ठिदाट्ठिदा त्ति दुस्सहावा भण्णदे । एत्थ जे अट्ठिदा[1] तेसिं कम्मबंधो होदु णाम, सजोगत्तादो । जे पुण ट्ठिदा तेसिं जीवापदेसाणं णत्थि कम्मबंधो, जोगाभावादो । सो वि कुदो णव्वदे ? जीवपदेसाणं परिप्फंदाभावादो । ण च परिप्फंदविरहियजीवपदेसेसु जोगो अत्थि, सिद्धाणं पि सजोगत्तावत्तीदो[2] त्ति ?

....

स्थित कर्मप्रदेशोंका भी अस्थितपना नहीं बनता और इसलिए सब जीवप्रदेश किसी भी समय अस्थित होते हैं, यह सूत्रवचन घटित नहीं होता ?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जीवके उन आठ मध्य प्रदेशोंको छोडकर शेष जीवप्रदेशोंका आश्रय करके इस सूत्रकी प्रवृत्ति हुई है ।

शंका – इस अर्थविशेषकी उपलब्धि किस प्रकारसे होती है ?

समाधान – उसकी उपलब्धि 'स्यात्' शब्दके प्रयोगसे होती है ।

उक्त वेदना कथंचित् स्थित-अस्थित है ॥ ३ ॥

व्याधि, वेदना एवं भय आदिक क्लेशोंसे रहित छद्मस्थके किन्हीं जीवप्रदेशोंका चूँकि संचार नहीं होता, अतएव उनमें स्थित कर्मप्रदेश भी स्थित ही होते हैं । तथा उसी छद्मस्थके किन्हीं जीवप्रदेशोंका चूँकि संचार पाया जाता है, अतएव उनमें स्थित कर्मप्रदेश भी संचारको प्राप्त होते हैं, इसलिये वे अस्थित कहे जाते हैं । यत: उन दोनोंके समुदाय स्वरूप वेदना एक है अत: वह स्थित-अस्थित इन दो स्वभाववाली कही जाती है ।

शंका – इनमें जो जीवप्रदेश अस्थित हैं उनके कर्मबन्ध भले ही हो, क्योंकि, वे योग सहित हैं । किन्तु जो जीवप्रदेश स्थित हैं उनके कर्मबन्धका होना सम्भव नहीं है, क्योंकि, वे योगसे रहित हैं ।

प्रतिशंका – वह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

प्रतिशंकाका समाधान – जीवप्रदेशोंका परिस्पन्द न होनेसे ही जाना जाता है कि वे योगसे रहित हैं । और परिस्पन्दसे रहित जीवप्रदेशोंमें योगकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर सिद्ध जीवोंके भी सयोग होनेकी आपत्ति आती है ।

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'अट्ठिदा', ताप्रतौ 'अहि (ट्ठि) दा', मप्रतौ 'लद्धिदा' इति पाठः ।

(२) ताप्रतौ 'सजोगत्ता (दो) वत्तीदो' इति पाठः ।

एत्थ परिहारो वुच्चदे-मण-वयण-कायकिरियासमुप्पत्तीए जीवस्स उवजोगो जोगो णाम[१] । सो च कम्मबंधस्स कारणं । ण च सो थोवेसु जीवपदेसेसु होदि, एगजीवपयत्तस्स थोवावयवेसु चेव वुत्तिविरोहादो एक्कम्हि जीवे खंडखंडेण पयत्तविरोहादो वा । तम्हा ट्ठिदेसु जीवपदेसेसु कम्मबंधो अत्थि त्ति णव्वदे । ण च जोगादो णियमेण जीवपदेसपरिप्फंदो होदि, तस्स तत्तो अणियमेण समुप्पत्तीदो । ण च एकांतेण णियमो णत्थि चेव, जदि उप्पज्जदि तो तत्तो चेव उप्पज्जदि त्ति णियमुवलंभादो । तदो ट्ठिदाणं पि जोगो अत्थि त्ति कम्मबंधभूयमिच्छियव्वं ।

एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं ।। ४ ।।

जहा णाणावरणीयस्स दुविहा गदिविहाणपरूवणा कदा तहा एदेसिं तिण्णं पि कम्माणं कायव्वं, छदुमत्थेसु चेव वट्टमाणत्तणेण भेदाभावादो ।

वेयणीयवेयणा सिया ट्ठिदा ।। ५ ।।

कुदो ? अजोगिकेवलिम्मि णट्ठासेसजोगम्मि जीवपदेसाणं संकोचविकोचाभावेण अवट्ठाणुवलंभादो ।

सिया अट्ठिदा ।। ६ ।।

....

शंकाका समाधान – यहाँ उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं । मन, वचन एवं काय संबंधी क्रियाकी उत्पत्तिमें जो जीवका उपयोग होता है वह योग है और वह कर्मबन्धका कारण है । परन्तु वह थोडेसे जीवप्रदेशोंमें नहीं हो सकता, क्योंकि, एक जीवमें प्रवृत्त हुए उक्त योगकी थोडेसे ही अवयवोंमें प्रवृत्ति माननेमें विरोध आता है, अथवा एक जीवमें उसके खण्ड-खण्ड रूपसे प्रवृत्त होनेमें विरोध आता है । इसलिये स्थित जीवप्रदेशोंमें कर्मबन्ध होता है, यह जाना जाता है । दूसरे योगसे जीवप्रदेशोंमें नियमसे परिस्पन्द होता है, ऐसा नहीं है, क्योंकि, योगसे अनियमसे उसकी उत्पत्ति होती है । तथा एकान्ततः नियम नहीं है, एसी भी बात नहीं है, क्योंकि, यदि जीवप्रदेशोंमें परिस्पन्द उत्पन्न होता है तो वह योगसे ही उत्पन्न होता है, ऐसा नियम पाया जाता है । इस कारण स्थित जीवप्रदेशोंमें भी योगके होनेसे कर्मबन्धको स्वीकार करना चाहिये ।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्मोंके विषयमें जानना चाहिये ।। ४ ।।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके गतिविधानकी दो प्रकारकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार इन तीन कर्मोंकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, ये कर्म छद्मस्थोंके ही विद्यमान रहते हैं, इसलिए इनकी प्ररूपणामें ज्ञानावरणीयकी प्ररूपणासे कोई भेद नहीं है ।

वेदनीय कर्मकी वेदना कथंचित् स्थित है ।। ५ ।।

इसका कारण यह है कि अयोगकेवली जिनमें समस्त योगोंके नष्ट हो जानेसे जीवप्रदेशोंका संकोच व विस्तार नहीं होता है, अतएव वे वहाँ अवस्थित पाये जाते हैं ।

कथंचित् वह अस्थित है ।। ६ ।।

....

(१) ताप्रतौ 'उवजोगो णाम' इति पाठः ।

सुगममेदं, णाणावरणीयपरूवणाए चेव अवगदसरूवत्तादो ।

सिया ट्ठिदाट्ठिदा ॥ ७ ॥

एदस्स वि णाणावरणीयभंगो ।

एवमाउव-णामा-गोदाणं ॥ ८ ॥

जहा वेयणीयस्स परूविदं तहा एदेसिं तिण्णं कम्माणं वत्तव्वं, भेदाभावादो ।

उजुसुदस्स णाणावरणीयवेयणा सिया ट्ठिदा ॥ ९ ॥

छदुमत्थेसु सजोगेसु कधं सव्वेसिं जीवपवेसाणं ट्ठिदत्तं होदि उजुसुदणए ? को एवं भणदि[1] उजुसुदणओ सव्वेसिं जीवपदेसाणं कम्हि वि काले ट्ठिदत्तं चेव इच्छदि त्ति । किंतु जे ट्ठिदा ते ट्ठिदा चेव, ण अट्ठिदा, ठिदेसु अट्ठिदत्तविरोहादो त्ति । एस उजुसुदणयाहिप्पाओ।

सिया अट्ठिदा ॥ १० ॥

जे अट्ठिदजीवपदेसा ते अट्ठिदा चेव ण तत्थ ट्ठिदभूआ[2], ट्ठिदाट्ठिदाणमेगत्थ एग-समए अवट्ठाणाभावादो । तेण कारणेण उजुसुदणए दुसंजोगभंगो णत्थि त्ति अवणिदो ।

....

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, ज्ञानावरणीय कर्मकी प्ररूपणासे ही उसके स्वरूपका ज्ञान हो जाता है।

कथंचित् वह स्थित-अस्थित है ॥ ७ ॥

इसकी भी प्ररूपणा ज्ञानावरणीयके ही समान है ।

इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्र कर्मके सम्बन्धमें जानना चाहिये ॥ ८ ॥

जिस प्रकार वेदनीय कर्मके गतिविधानकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार इन तीन कर्मोंके गतिविधानकी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी वेदना कथंचित् स्थित है ॥ ९ ॥

शंका – योगसहित छद्मस्थ जीवोंमें ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा सभी जीवप्रदेश स्थित कैसे हो सकते हैं ?

समाधान – ऐसा कौन कहता है कि ऋजुसूत्र नय सब जीवप्रदेशोंको किसी भी कालमें स्थित ही स्वीकार करता है ? किन्तु जो जीवप्रदेश स्थित हैं वे स्थित ही रहते हैं, उस कालमें वे अस्थित नहीं हो सकते । क्योंकि, स्थित जीवप्रदेशोंके अस्थित होनेका विरोध है । यह ऋजुसूत्र नयका अभिप्राय है ।

कथंचित् वह अस्थित है ॥ १० ॥

जो जीवप्रदेश अस्थित हैं वे अस्थित ही रहते हैं, न कि स्थित, क्योंकि, इस नयकी अपेक्षा स्थित-अस्थित जीवप्रदेशोंका एक जगह एक समयमें अवस्थान नहीं हो सकता । इस कारण ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा द्विसंयोग भंग नहीं है, अत: वह परिगणित नहीं यिा गया है । पर इससे

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'भण्णदि', इति पाठः ।

(२) अ-आ-काप्रतिषु 'ट्ठिदभूअ', ताप्रतौ 'ट्ठिदभूअ (अं)' इति पाठः ।

ण पुव्विल्लणए अस्सिदूण जा परूवणा कदा तिस्से असच्चत्तं, सियासद्देण तिस्से वि सच्चत्तपरूवणादो ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ।। ११ ।।

उजुसुदणयमस्सिदूण जहा णाणावरणीयस्स परूवणा कदा तहा सेससत्तण्णं कम्माणं परूवणा कायव्वा, ठिदभावेण[1] अट्ठिदभावेण च विसेसाभावादो ।

सद्दणयस्स अवत्तव्वं ।। १२ ।।

कुदो ? तस्स विसए दव्वाभावादो तस्स विसये [2]ट्ठिदाट्ठिदाणमभावादो वा । तं जहा– ण ताव ट्ठिदमत्थि, सव्वपयत्थाणमणिच्चत्तब्भुवगमादो । ण अट्ठिदभूयं पि, असंते[3] पडिसेहाणुववत्तीदो त्ति ।

एवं वेयणागदिविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

....

पूर्वोक्त नयोंका आश्रय करके जो प्ररूपणा की गई है वह असत्य नही ठहरती, क्योंकि, 'स्यात्' शब्दके द्वारा उसकी भी सत्यता प्ररूपित की गई है ।

इसी प्रकार सात कर्मोंके विषयमें जानना चाहिये ।। ११ ।।

ऋजुसूत्र नयका आश्रय करके जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी प्ररूपणा करनी चाहियें, क्योंकि, स्थित रूप व अस्थितरूपसे इसमें उससे कोई विशेषता नहीं है ।

शब्द नयकी अपेक्षा वह अवक्तव्य है ।। १२ ।।

क्योंकि, द्रव्य शब्द नयका विषय नहीं है, अथवा स्थित व अस्थित शब्दनयके विषय नहीं हैं । स्पष्टीकरण इस प्रकार है – उक्त नयका विषय स्थित तो बनता नहीं है, क्योंकि, इस नयमें समस्त पदों व उनके अर्थोंको अनित्य स्वीकार किया गया है । अस्थित स्वरूप भी नहीं बनता, क्योंकि, असत्का प्रतिषेध बन नहीं सकता ।

इस प्रकार वेदनागतिविधान यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

....

(१) अ-आकाप्रतिषु 'ठिदाभावेण' इति पाठः । (२) अ-आ-का-ताप्रतिषु 'तस्स वि ट्ठिदाट्ठिदाण' इति पाठः ।
(३) अ-आ-काप्रतिषु 'असंखे' इति पाठः ।